अध्याय 6

मौर्य एवं मौर्योत्तर काल

इस अध्याय में आप सीखेंगे किः

- मौर्य साम्राज्य की नींव कैसे और किन परिस्थितियों में पड़ी तथा इस साम्राज्य के प्रमुख अभिलक्षणों के बारे में सीखेंगे।
- मौर्य शासन के दौरान उसकी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक नीतियाँ क्या थीं।
- मौर्य एवं मौर्योत्तर काल के दौरान अन्य शासकों/समकालीन शासकों के बारे में भी क्या जानकारी है।

मौर्य साम्राज्य (Mauryan Empire)

मौर्य साम्राज्य के रूप में पहली बार भारत में एक अखिल भारतीय साम्राज्य का निर्माण हुआ, मौर्य राजवंश में चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार एवं अशोक जैसे महान शासक हुए; जिनके प्रयासों से राज्य का विस्तार एवं विकास हुआ।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र, दीपवंश एवं महावंश, वायुपुराण, जैन साहित्य, विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, अशोक के शिलालेख तथा यूनानी लेखकों: नियार्कस, अनासिक्रिट्स, मेगस्थनीज का विवरण मौर्य इतिहास के उल्लेखनीय स्रोत हैं।

चन्द्रगुप्त मौर्य (321–298 ई.पू.)

चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरू चाणक्य की सहायता से नन्द वंश के अन्तिम शासक घनानन्द को पराजित कर मौर्य वंश की स्थापना की।

ब्राह्मण साहित्य में चन्द्रगुप्त मौर्य को शूद्र, बौद्ध एवं जैन ग्रन्थ में क्षत्रिय तथा मुद्राराक्षस ने निम्न कुल का माना है। जस्टिन, स्ट्रेबो, एरियन ने चन्द्रगुप्त मौर्य को 'सैण्ड्रोकोट्स' तथा एप्पियॉनस एवं प्लूटार्क ने 'एण्ड्रोकोट्स' कहा है। सर्वप्रथम विलियम जोन्स ने ही सैण्ड्रोकोट्स को चन्द्रगुप्त मौर्य से साम्यता स्थापित किया था।

305 ई.पू. में चन्द्रगुप्त ने तत्कालीन यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर को पराजित किया। सन्धि हो जाने के पश्चात् सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त से 500 हाथी लेकर बदले में एरिया (हेरात), अराकोसिया (कन्धार), जेड्रोसिया (बलूचिस्तान) एवं पेरोपनिसडाई (काबुल) के क्षेत्रों का कुछ भाग उसे सौंपा और अपनी पुत्री हेलेना का विवाह चन्द्रगुप्त से कर दिया। इस युद्ध का विवरण सिर्फ एप्पियॉनस ही देता है।

बंगाल पर चन्द्रगुप्त की विजय महास्थान अभिलेख से ज्ञात होती है। चन्द्रगुप्त मौर्य की दक्षिण भारत की विजय के विषय में जानकारी तमिल ग्रन्थ *अहनानूर* एवं *पुरनानूर* तथा अशोक के अभिलेखों से मिलती है। यूनानी लेखक प्लूटार्क के अनुसार, चन्द्रगुप्त ने छः लाख सेनानियों के साथ सम्पूर्ण भारत को रौंद डाला।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने सुदर्शन झील (गिरनार क्षेत्र) का निर्माण करवाया तथा अशोक ने ई.पू. तीसरी शताब्दी में इससे नहरें निकाली।

शक क्षत्रप रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में इन दोनों के कार्यों का वर्णन है।

सेहगौरा ताम्रपत्र तथा महास्थान अभिलेख चन्द्रगुप्त मौर्य से संबंधित हैं। ये अभिलेख अकाल के समय किए जाने वाले राहत कार्यों के संबंध में विवरण देते हैं।

अपने जीवन के अन्तिम चरण में पुत्र के पक्ष में सिंहासन छोड़कर चन्द्रगुप्त मौर्य ने जैन साधु भद्रबाहु से जैन धर्म की दीक्षा ली और श्रवणबेलगांव (मैसूर) जाकर 298 ई.पू. में उपवास द्वारा शरीर त्याग दिया।

बिन्दुसार (298–273 ई.पू.)

चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चात् उसका पुत्र बिन्दुसार ने शासन की बागडोर अपने हाथ में ली। यूनानी लेखों में इसे अमित्रेचेट्स (जिसका संस्कृत रूपांतरण

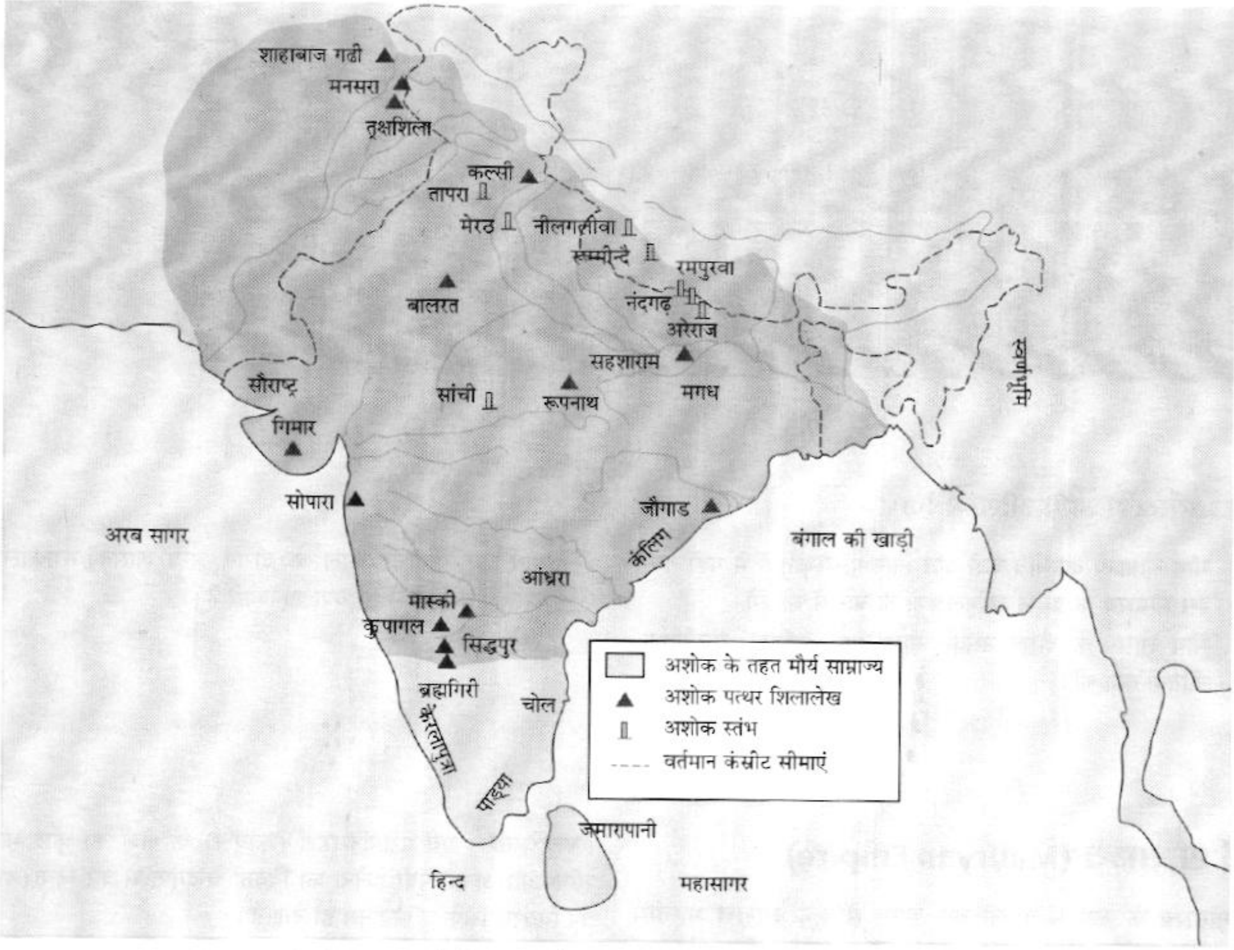

चित्र 6.1: मौर्यकाल अशोक कालीन स्थान और महत्त्वपूर्ण नगर

अमित्रघात है), वायुपुराण में भद्रसार तथा जैन ग्रन्थों में सिंहसेन कहा गया है। अमित्रघात का अर्थ होता है—शत्रुओं का नाश करने वाला।

बौद्ध ग्रन्थ दिव्यावदान के अनुसार, बिन्दुसार के समय में तक्षशिला में अमात्यों के विरुद्ध दो विद्रोह हुए; जिनका दमन करने के लिए पहली बार उज्जैन के प्रशासक अशोक तथा दूसरी बार सुसीम को भेजा गया।

एथीनियस नामक एक अन्य यूनानी लेख ने बिन्दुसार तथा सीरिया के शासक एण्टियोकस प्रथम के बीच मैत्रीपूर्ण पत्र-व्यवहार का विवरण दिया है, जिसमें भारतीय शासक ने तीन वस्तुओं की माँग की थी—मदिरा, मीठी अंजीर तथा दार्शनिक। सीरियाई सम्राट ने प्रथम दो (मदिरा तथा मीठी अंजीर) वस्तुएँ भिजवा दीं, परंतु तीसरी वस्तु अर्थात् दार्शनिक के सम्बन्ध में यह कहा कि यूनानी कानून के अनुसार दार्शनिकों का विक्रय नहीं किया जा सकता।

सीरिया के शासक एण्टियोकस ने डायमेकस को तथा मिस्र के शासक टॉलेमी द्वितीय ने डायनोसियस नामक राजदूत मौर्य दरबार में भेजा था। बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।

अशोक (273–232 ई.पू.)

अशोक 273 ई.पू. में शासन संभाला, किन्तु उत्तराधिकार युद्ध के कारण 4 वर्ष बाद उसका विधिवत् राज्याभिषेक 269 ई.पू. में हुआ। महावंश के अनुसार, अशोक ने अपने 99 भाइयों की हत्या कर, मंत्री राधागुप्त की सहायता से अपने बड़े और सौतेले भाई सुसीम (सुमन) को हटाकर गद्दी प्राप्त की।

अशोक को उसके शिलालेखों में सामान्यत: 'देवनामप्रिय' कहकर संबोधित किया गया है। भब्रू अभिलेख में उसे प्रियदर्शी जबकि मास्की में बुद्धशाक्य कहा गया है। अशोक नाम का उल्लेख मास्की, गुर्जरा, निट्टूर तथा उदगेलम अभिलेख में मिलता है।

सर्वप्रथम 1837 ई. में जेम्स प्रिन्सेप नामक अंग्रेज विद्वान ने अशोक के लेखों (ब्राह्मी लिपि) का उद्वाचन किया, सिंहली अनुश्रुतियों—दीपवंश तथा महावंश में देवनामप्रिय उपाधि अशोक के लिए प्रयुक्त की गई। वर्ष 1915 में मास्की (कर्नाटक) से प्राप्त लेख में '*अशोक*' नाम भी पढ़ लिया गया।

बौद्ध ग्रन्थों में अशोक की माता का नाम धम्मा, पासादिका तथा सुभद्रांगी मिलता है। बौद्ध ग्रन्थों से अशोक की पत्नी असन्धि मित्र, महादेवी, पद्मावती, तिष्यरक्षिता तथा प्रयाग स्तंभ लेख में कारूवाकी का नाम प्राप्त होता है। बौद्ध ग्रन्थों में अंशोक की दो पुत्रियों-संघमित्र तथा चारूमती एवं दो पुत्रें-कुणाल एवं महेन्द्र के नाम का उल्लेख मिलता है। पुत्र जालौक का उल्लेख राजतरंगिणी में तथा तीवर का उल्लेख प्रयाग स्तंभ लेख में मिलता है।

राजनीतिक जीवन

अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 9वें वर्ष, 261 ई.पू. में कलिंग पर विजय प्राप्त की। अपने राज्याभिषेक के 9 वें वर्ष अर्थात् 261 ई.पू. अशोक ने कलिंग विजय की उल्लेख 13 वें शिलालेख से मिलता है उस समय कलिंग का कौन राजा था इसके लिखित रूप में स्पष्ट पुष्ट साक्ष्य नहीं मिलते।

मौर्य शासक अशोक के 13वें शिलालेख से यह ज्ञात होता है कि अशोक के पाँच यवन राजाओं के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे—जिनमें अन्योिक (एण्टियोकस द्वितीय थियोस—सीरिया का शासक), तुरमय या तुरमाय (टॉलेमी द्वितीय फिलाडेल्फस—मिस्र का राजा), अन्तकिनी या एनिकीनी (एण्टीगोनस गोनातास—मेसीडोनिया या मकदूनिया का राजा), मग, मकमास या मेगारस (साइरीन का शासक), अलिक सुन्दर या एलिरू सण्ट्रो (अलेक्जेण्डर—एपाइरस या एपीरस का राजा)।

अशोक के दूसरे एवं 13वें शिलालेख में संगम राज्यों—चोल, पाण्ड्य, सत्तियपुत्त एवं केरलपुत्त सहित ताम्रपर्णी (श्रीलंका) की सूचना मिलती है। अशोक के द्वितीय शिलालेख से स्पष्ट होता है कि भारत में अशोक का अधिकार चोल, पाण्ड्य, सत्तियपुत्त, केरलपुत्त एवं ताम्रपर्णी (श्रीलंका) को छोड़कर सर्वत्र था, क्योंकि इन राज्यों को प्रत्यन्त या सीमावर्ती राज्य कहा गया है। अशोक ने खस एवं नेपाल में विजय की। राजतरंगिणी के अनुसार, उसने कश्मीर में श्रीनगर तथा नेपाल में देवपत्तन नामक नगर बसाया।

धार्मिक जीवन

अशोक पहले ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था। राजतरंगिणी के अनुसार, वह शैव धर्म का उपासक था। उसके अभिलेखों में सर्वत्र उसे 'देवनामप्रिय', 'देवाना प्रियदसि' कहा गया है, जिसका अर्थ है—देवताओं का प्रिय या देखने में सुन्दर। इससे उसकी हिन्दू धर्म में आस्था के संकेत मिलते हैं।

सिंहली अनुश्रुतियों (दीपवंश एवं महावंश) के अनुसार, अशोक ने अपने शासन के चौथे वर्ष में बड़े भाई सुमन के पुत्र निग्रोध के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म अपना लिया। तत्पश्चात् मोग्गलिपुत्ततिस्स के प्रभाव से वह पूर्णरूपेण बौद्ध हो गया। दिव्यावदान अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित करने का श्रेय उपगुप्त नामक बौद्ध भिक्षु को जाता है।

अशोक ने राज्याभिषेक के 10वें वर्ष बोधगया, 12वें वर्ष निगालीसागर तथा 20वें वर्ष लुम्बिनी की यात्रा की। निगालीसागर में कनकमुनि के स्तूप का संवर्द्धन किया। लुम्बिनी में भूमिकर घटाकर 1/8 भाग कर दिया। रूम्मिनदेई अभिलेख में इस बात की चर्चा है।

अशोक का धम्म

धम्म शब्द संस्कृत भाषा के धर्म का प्राकृत रूपांतर है। अशोक के धम्म की परिभाषा राहुलोवादसुत्त से ली गई है। स्वनियंत्रण अशोक की धम्म नीति का मुख्य सिद्धांत था।

भब्रू लघु शिलालेख में अशोक के धम्म का उल्लेख मिलता है, जिसमें वह त्रिसंघ-बुद्ध, धम्म और संघ में विश्वास करता है। उसने अपने 12वें शिलालेख में धम्म की 'सारवृद्धि' पर जोर दिया है। साँची और सारनाथ लघु स्तम्भ लेख में संघ में फूट डालने के विरुद्ध जारी आदेश कौशाम्बी और पाटलिपुत्र के महामात्रों को दिए गए हैं।

धम्म की स्थापना धम्म के विकास एवं धम्म की देख-रेख के लिए धम्म-महामात्र की नियुक्ति की गई। अशोक ने धम्म के विचारों को प्रसारित करने के लिए सीरिया, मिस्र, ग्रीस तथा श्रीलंका आदि देशों में दूत भी भेजे।

अशोक के अभिलेख

अशोक के अभिलेख राज्यादेश के रूप में जारी किए गए हैं। वह पहला शासक था, जिसने अभिलेखों के द्वारा जनता को सम्बोधित किया। अशोक के अभिलेख—ब्राह्मी, खरोष्ठी, यूनानी एवं अरमाइक लिपि में है। सभी अभिलेखों की भाषा प्राकृत है।

शाहबाजगढ़ी एवं मानसेहरा अभिलेखों में खरोष्ठी लिपि तथा तक्षशिला एवं लघमान अभिलेखों में अरमाइक लिपि का प्रयोग किया गया है। शर-ए-कुना (कन्धार) अभिलेखों में अरमाइक एवं यूनानी भाषा का प्रयोग किया गया है।

अशोक के अभिलेखों का विभाजन निम्नलिखित वर्गों में किया जा सकता है—

- **शिलालेख**—इन्हें वृहद् शिलालेख एवं लघु शिलालेख दो वर्गों में बाँटा जाता है।
- **स्तम्भलेख**—इन्हें दीर्घ स्तम्भलेख एवं लघु स्तम्भलेख में विभाजित किया जाता है।
- **गुहालेख**—ये गुफाओं में उत्कीर्ण लेख हैं।

तालिका 6.1: अशोक के दीर्घ शिलालेख

शिलालेख	स्थान
शाहबाजगढ़ी	पेशावर (पाकिस्तान)
मानसेहरा	हजारा (पाकिस्तान)
कालसी	देहरादून (उत्तराखण्ड)
गिरनार	जूनागढ़ (गुजरात)
जौगढ़	गन्जाम (ओडिशा)
सोपारा	थाणे (महाराष्ट्र)
एर्रागुडी	कुर्नूल (आन्ध्र प्रदेश)
धौली	पुरी (ओडिशा)

तालिका 6.2: अशोक के लघु शिलालेखा

लघु शिलालेख	स्थान
मास्की	रायचूर (कर्नाटक)
गुर्जरा	दतिया (मध्य प्रदेश)
ब्रह्मगिरि	मैसूर (कर्नाटक)
भाब्रू	जयपुर (राजस्थान)
अहरौरा	मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)
जटिंग रामेश्वर	कर्नाटक
सासाराम	बिहार
रूपनाथ	जबलपुर (मध्य प्रदेश)
पालिक गुण्डु	कर्नाटक
राजुल मण्डगिरि	कुर्नूल (आन्ध्र प्रदेशल)
गोविमठ	मैसूर (कर्नाटक)
सिद्धपुर	कर्नाटक
उदगेलन	वेल्लारी (कर्नाटक)
पनगुडरिया	मध्य प्रदेश
सन्नाती	कर्नाटक
एर्रागुडी	कुर्नुल (आन्ध्र प्रदेश)
सारोमारो	मध्य प्रदेश
नेट्टूर	मैसूर

तालिका 6.3: अशोक के दीर्घ स्तम्भलेख

दीर्घ स्तम्भ लेख	स्थान
इलाहाबाद	उत्तर प्रदेश
टोपरा–दिल्ली	हरियाणा
मेरठ–दिल्ली	उत्तर प्रदेश
लौरिया–अरराज	बिहार
रामपुरवा	बिहार
लौरिया–नन्दनगढ़	बिहार

धौली तथा जौगढ़ के शिलालेखों पर 11वें, 12वें तथा 13वें शिलालेख उत्कीर्ण नहीं किए गए हैं। इनकी जगह दो पृथक लेख हैं।

अशोक के लघु शिलालेख, स्तम्भ लेख (दीर्घ एवं लघु) एवं गुहालेखों की लिपियाँ केवल ब्राह्मी हैं।

तालिका 6.4: अशोक के लघु स्तम्भलेख

लघु स्तम्भ लेख	स्थान
इलाहाबाद–कौशाम्बी	उत्तर प्रदेश
साँची	मध्य प्रदेश
सारनाथ	उत्तर प्रदेश
निगालीसागर	नेपाल की तराई
रूम्मिनदेई	नेपाल की तराई

स्तम्भ लेखों में मुख्य रूप से धम्म तथा प्रशासनिक बातों का उल्लेख है। इन पर लेखों की संख्या 7 है। फिरोजशाह तुगलक ने मेरठ तथा टोपरा के स्तम्भ दिल्ली मँगा लिए थे। इलाहाबाद स्तम्भ लेख पहले कौशाम्बी में था। अकबर के शासनकाल में जहाँगीर द्वारा इसे इलाहाबाद के किले में रखा गया।

तालिका 6.5: चौदह शिलालेख

शिलालेख	संबंधित तथ्य
पहला	पशुबलि की निन्दा।
दूसरा	मनुष्यों एवं पशुओं दोनों की चिकित्सा व्यवस्था का उल्लेख। चोल, पाण्ड्य, सत्तिपुत्त एवं केरलपुत्त की चर्चा।
तीसरा	राजकीय अधिकारियों (युक्त, रज्जुक और प्रादेशिक) को हर पाँचवें वर्ष दौरा करने का आदेश।
चौथा	भेरीघोष की जगह धम्मघोष की घोषणा।
पाँचवाँ	सभी–सम्प्रदायों के लिए सहिष्णुता की बात।
छठाँ	धम्म महामात्र किसी भी समय राजा के पास सूचना ला सकता है प्रतिवेदक की चर्चा।
सातवाँ	सभी–सम्प्रदायों के लिए सहिष्णुता की बात।
आठवाँ	सम्राट की धर्मयात्रओं का उल्लेख। बोधिवृक्ष के भ्रमण का उल्लेख।
नौवाँ	विभिन्न प्रकार के समारोहों की निन्दा।
दसवाँ	ख्याति एवं गौरव की निन्दा तथा धम्म नीति की श्रेष्ठता पर बल। ग्यारहवाँ धम्म नीति की व्याख्या।
बारहवाँ	सर्वधर्म समभाव एवं स्त्री महामात्र की चर्चा।
तेरहवाँ	कलिंग युद्ध का वर्णन, पड़ोसी राज्यों का वर्णन, अपराध करने वाली आटविक जातियों का उल्लेख।
चौदहवाँ	यह लेख कहीं संक्षेप में, कहीं मध्यम रूप में और कहीं विस्तृत रूप में है।

अशोककालीन पश्चिमी शक्तियों (यवन, गान्धार, कम्बोज, भोज, आन्ध्र पितनिक) का वर्णन 13वें शिलालेख में है।

कौशाम्बी (इलाहाबाद) स्तम्भलेख को 'रानी का अभिलेख' भी कहा जाता है। रूम्मिनदेई अभिलेख अशोक का सबसे छोटा अभिलेख माना जाता है। इसे आर्थिक अभिलेख भी कहा जाता है।

प्रशासनिक व्यवस्था

कौटिल्य ने राज्य की सप्तांग विचारधारा को प्रतिपादित किया। राज्य के सात अंग हैं—राज्य, राजा, मंत्री, मित्र, कर/कोष, सेना तथा दुर्ग।

मौर्य प्रशासन केन्द्रीकृत शासन प्रणाली थी, जिसमें शासन का केन्द्र बिन्दु राजा होता था। अर्थशास्त्र एवं अशोक के शिलालेख में मंत्रिपरिषद (परिषद्) का उल्लेख मिलता है। मंत्रिपरिषद के सदस्यों का चुनाव उनके चरित्र की भली-भाँति जाँच के बाद किया जाता था, जिसे उपधा परीक्षण कहा जाता था।

तालिका 6.6: अर्थशास्त्र में वर्णित प्रमुख तीर्थ

तीर्थ	सम्बन्धित विभाग
पुरोहित	प्रधानमंत्री, प्रमुख धर्माधिकारी
प्रशास्ता	राजकीय कागजात सुरक्षित करना
सेनापति	युद्ध विभाग का मंत्री
युवराज	राजा का उत्तराधिकारी
समाहर्ता	राजस्व विभाग का प्रधान (वित्त मंत्री)/ राजस्व संग्रहीता
सन्निधाता	राजकीय कोषाध्यक्ष
प्रदेष्टा	फौजदारी न्यायालय का न्याधीश (कमिश्नर)
नायक	सेना का संचालक अथवा नगर रक्षा का अध्यक्ष
कर्मान्तिक	उद्योगों एवं कारखानों का अध्यक्ष
दण्डपाल	पुलिस अधिकारी
व्यावहारिक	नगर का प्रमुख न्यायाधीश
नागरिक	नगर का प्रमुख अधिकारी या नगर कोतवाल
दुर्गपाल	राजकीय दुर्ग रक्षकों का अध्यक्ष
अन्तपाल	सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक
आटविक	वन विभाग का प्रधान
दौवारिक	राजमहलों की देख-रेख करने वाला प्रधान
आन्तर्वेशिक	अन्तःपुर का अध्यक्ष
मन्त्रिपरिषदाध्यक्ष	परिषद् का अध्यक्ष

अर्थशास्त्र में सबसे उच्च अधिकारी को तीर्थ कहा गया है। कुल 18 तीर्थों की चर्चा मिलती है, जिसके लिए अधिकतर स्थानों पर महामात्र शब्द भी मिलता है। इसके अतिरिक्त 26 अध्यक्षों की चर्चा भी मिलती है।

मौर्यकालीन प्रान्त

मौर्य साम्राज्य पाँच बड़े प्रान्तों में विभाजित था। उत्तरापथ की राजधानी तक्षशिला, दक्षिणापथ की सुवर्णगिरि, अवन्ति की उज्जयिनी, कलिंग की तोसाली तथा प्राची (मध्य प्रदेश) की राजधानी पाटलिपुत्र थी। प्रान्तों का शासन राजवंशीय कुमार या आर्यपुत्र नामक पदाधिकारियों द्वारा होता था। अशोक सिंहासनारूढ़ होने से पूर्व उत्तरापथ एवं अवन्ति का कुमार रह चुका था। कुमारामात्य की सहायता हेतु प्रत्येक प्रान्त में महामात्र नामक अधिकारी होते थे।

तालिका 6.7: अर्थशास्त्र में वर्णित प्रमुख अध्यक्ष

अध्यक्ष	संबंधित विभाग
पण्याध्यक्ष	वाणिज्य का अध्यक्ष
पौतवाध्यक्ष	माप-तौल का अध्यक्ष
सुराध्यक्ष	शराब एवं मदिरा का अध्यक्ष
सूनाध्यक्ष	बूचड़खाने का अध्यक्ष
आकराध्यक्ष	खानों का अध्यक्ष
सीताध्यक्ष	कृषि विभागों का अध्यक्ष
कुप्याध्यक्ष	वन तथा उसकी सम्पदा का अध्यक्ष
सूत्रध्यक्ष	कताई, बुनाई विभाग का अध्यक्ष
लोहाध्यक्ष	धातु विभाग का अध्यक्ष
लक्षणाध्यक्ष	टकसाल का अध्यक्ष
मुद्राध्यक्ष	पासपोर्ट विभाग का अध्यक्ष
लवणाध्यक्ष	नमक विभाग का अध्यक्ष
शुल्काध्यक्ष	चुँगी एवं शुल्क विभाग का अध्यक्ष
देवताध्यक्ष	धार्मिक संस्थान का अध्यक्ष
नवाध्यक्ष	जहाजरानी विभाग का अध्यक्ष
विवीताध्यक्ष	चारागाह का अध्यक्ष
समस्थाध्यक्ष	बाजार का अध्यक्ष

मौर्य काल में प्रान्तों को चक्र कहा जाता था, जो मण्डलों में विभाजित थे। इन पर महामात्य नामक अधिकारी थे जो मण्डल, जिलों में विभाजित थे, जिन्हें विषय या आहार कहा जाता था। प्रादेशिक, रज्जुक और युक्त इससे जुड़े अधिकारी थे। गाँव और जिले के बीच एक मध्यवर्ती स्तर था; गोप और स्थानिक इससे जुड़े अधिकारी थे। स्थानिक, युक्त, रज्जुक, प्रादेशिक एवं समाहर्ता बढ़ते हुए क्रम में अधिकारी थे।

ग्राम समूहों के अन्तर्गत विभिन्न कोटियाँ थीं—स्थानीय (800 ग्राम), द्रोणमुख (400 ग्राम), खार्वटिक (200 ग्राम), संग्रहण (10 ग्राम) आदि। 'ग्राम' प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी, इसका प्रधान ग्रामिक होता था।

मेगस्थनीज के अनुसार, नगर का प्रशासन तीस सदस्यों का एक मण्डल करता था, जो 6 समितियों में विभक्त था। प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।

पहली समिति का कार्य उद्योग शिल्पों का निरीक्षण; दूसरी समिति का विदेशियों की देख-रेख; तीसरी समिति का जन्म-मरण का लेखा-जोखा रखना; चौथी समिति का व्यापार/वाणिज्य; पाँचवीं समिति का निर्मित वस्तुओं के विक्रय का निरीक्षण करना तथा छठी समिति का बिक्री कर वसूल करना था।

यूनानी स्त्रोतों से तीन प्रकार के अधिकारियों के विषय में जानकारी मिलती है—एस्ट्रोनोमोई (नगर का प्रमुख), एग्रोनोमोई (जिले का अधिकारी) एवं सैनिक अधिकारी।

मौर्यकाल में दीवानी न्यायालय धर्मस्थीय तथा फौजदारी न्यायालय कण्टकशोधन कहलाता था। दीवानी न्यायालय का न्यायाधीश धर्मस्थ / व्यावहारिक एवं फौजदारी न्यायालय का न्यायाधीश प्रदेष्टा कहलाता था।

मौर्य काल में गुप्तचरों को गूढ़पुरुष तथा इसके अधिकारी को सर्पमहामात्य कहा गया है। अर्थशास्त्र में दो प्रकार के गुप्तचरों का वर्णन है—संस्था, जो संगठित होकर कार्य करते थे तथा संचरा, जो घुमक्कड़ थे।

आर्थिक स्थिति

कृषि

मौर्यकाल मुख्यत: कृषि प्रधान था। राजकीय भूमि को सीता कहा जाता था। भूमि पर राज्य तथा कृषक दोनों का अधिकार होता था। राजकीय भूमि (सीता भूमि) की व्यवस्था करने वाला प्रधान अधिकारी सीताध्यक्ष कहलाता था। इस भूमि पर दासों, कर्मचारियों और कैदियों द्वारा जुताई-बुआई होती थी। अर्थशास्त्र में क्षेत्रक (भू-स्वामी) और उपवास (काश्तकार) में स्पष्ट भेद किया गया है।

कौटिल्य ने '*अर्थशास्त्र*' में कृष्ट (जुती हुई), अकृष्ट (बिना जुती हुई), स्थल (ऊँची भूमि) आदि अनेक प्रकार की भूमियों का वर्णन किया है। अदेवमातृक भूमि वह होती थी, जिसमें बिना वर्षा के भी अच्छी खेती होती थी। राज्य की ओर से सिंचाई का समुचित प्रबन्ध किया गया था, जिसे सेतुबन्ध कहा गया है।

मौर्य काल में भूमि पर उपज का एक-चौथाई (1/4) या छठा भाग (1/6) भू-राजस्व के रूप में वसूला जाता था। सिंचाई के लिए अलग से उपज का 1/5 से 1/3 भगा कर के रूप में लिया जाता था।

वाणिज्य एवं व्यापार

मौर्य काल में अनेक उद्योग प्रचलित थे, जिनमें सूत कातने एवं बुनने का उद्योग प्रमुख था। बंग का मलमल विख्यात था। कौटिल्य ने चीनपट्ट का भी उल्लेख किया है। यह रेशम चीन से आता था।

वाणिज्य एवं व्यापार पर राज्य का नियंत्रण था। इस काल में ताम्रलिप्त पूर्वी तट का महत्वपूर्ण बन्दरगाह था, पश्चिमी तट पर भड़ौच तथा सोपरा प्रमुख बंदरगाह थे। कौटिल्य ने स्थल मार्ग की अपेक्षा नदी मार्ग को तथा उत्तर के मार्गों की तुलना में दक्षिण के मार्ग को ज्यादा महत्वपूर्ण माना है, क्योंकि दक्षिण में सोने एवं कीमती धातु मिलते थे।

वे वस्तुएँ जिनका राज्य स्वयं व्यापार करता था, राजपण्य कहलाती थीं। व्यापारियों का नेता सार्थवाह कहलाता था। मौर्यकाल में देशी उत्पादों पर 4% तथा आयातित वस्तुओं पर 10% बिक्री कर लिया जाता था। कौटिल्य ने महाजनी व्यवस्था का भी विस्तृत विवरण दिया है। सम्भवत: ब्याज की राशि 15% थी।

राजस्व के स्रोत

मौर्य काल में दुर्ग (नगरों से प्राप्त आय), राष्ट्र (जनपदों ग्रामों से प्राप्त आय), सेतु (फल-फूल एवं सब्जियों से प्राप्त आय), ब्रज (पशुओं से प्राप्त आय), सीता (राजकीय भूमि से होने वाली आय), प्रणय (आपातकालीन कर), हिरण्य (नकद राजस्व), उदकभाग (सिंचाई कर), वर्तनी (सीमा कर) तथा पिण्डकर पूरे गाँव से कर राजस्व के प्रमुख स्त्रोत थे।

मेगस्थनीज के अनुसार, बिक्रीकर न देने वालों को मृत्युदण्ड दिया जाता था। मौर्यों की राजकीय मुद्रा पण थी। मौर्यकाल में आहत मुद्राएँ भी प्रचलित थीं। अर्थशास्त्र में सिक्के के लिए रूप शब्द का प्रयोग हुआ है। इस काल में सोने का सिक्का सुवर्ण एवं पाद, चाँदी का सिक्का कर्षापण, पण और धरण तथा ताँबे का सिक्का मासक, काकणी और अर्द्धकाकणी कहलाता था।

सामाजिक स्थिति

मेगस्थनीज ने भारतीय समाज को सात जातियों में विभक्त किया है—दार्शनिक, किसान, अहीर, कारीगर व शिल्पी सैनिक, निरीक्षक तथा सभासद। इनमें सबसे अधिक संख्या किसानों की थी।

कौटिल्य ने वर्णाश्रम व्यवस्था को सामाजिक संगठन का आधार माना है तथा चारों वर्णों के व्यवसाय निर्धारित किए हैं। अर्थशास्त्र में शूद्रों को आर्य कहा गया है तथा उन्हें मलेच्छों से भिन्न माना गया है। इस काल में शूद्रों को व्यापक पैमाने पर कृषि कार्य में लगाया गया। कौटिल्य ने नौ प्रकार के दासों की चर्चा की है। अशोक के शिलालेखों में दास और कर्मकार का उल्लेख है। मेगस्थनीज के अनुसार भारत में दास प्रथा नहीं थी।

समाज में वेश्यावृत्ति की प्रथा प्रचलित थी तथा इसे राजकीय संरक्षण भी प्राप्त था। स्वतंत्र रूप से वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्रियाँ रूपाजीवा कहलाती थीं। इनके कार्यों का निरीक्षण गणिकाध्यक्ष करता था। सम्भ्रान्त परिवारों की स्त्रियाँ प्राय: घर के अन्दर ही रहती थीं। कौटिल्य ने ऐसी स्त्रियों को अनिष्कासिनी कहा है। समाज में विधवा विवाह प्रचलित था। कुछ विधवाएँ स्वतंत्र रूप से जीवन-यापन करती थीं, जिन्हें छन्दवासिनी कहा जाता था।

धार्मिक स्थिति

मौर्यकाल में वैदिक धर्म प्रचलित था, किन्तु कर्मकाण्ड प्रधान वैदिक धर्म अभिजात ब्राह्मण तथा क्षत्रियों तक ही सीमित था। इस काल में बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन किया जाता था। मेगस्थनीज ने धार्मिक व्यवस्था में डायोनीसस एवं हेराक्लीज की चर्चा की है, जिसकी पहचान क्रमशः शिव एवं कृष्ण से की गई है।

जनसाधारण में नागपूजा का प्रचलन था। मूर्तिपूजा का भी प्रचलन था। पतंजलि के अनुसार, मौर्यकाल में देवमूर्तियों को बेचा जाता था, जिन्हें बनाने वाले शिल्पियों को देवताकार कहा जाता था। अर्थशास्त्र में वरूण, नागराज और संकर्षण देवताओं का उल्लेख है।

चन्द्रगुप्त जैन धर्म का तथा बिन्दुसार आजीवक धर्म का अनुयायी था। अशोक प्रारंभ में ब्राह्मण धर्म (शैव) मानता था, लेकिन बाद में बौद्ध धर्म का अनुयायी हो गया। अशोक तथा उसके पौत्र दशरथ ने कुछ गुफाएँ आजीवकों को दान में दी थीं।

कला एवं स्थापत्य

मौर्यकालीन कला को राजकीय एवं लोक कला में बाँटा जा सकता है। राजकीय कला के अंतर्गत नगर निर्माण, स्तूप, गुफाएँ तथा स्तम्भों का निर्माण हुआ। लोक कला के अन्तर्गत मुख्यतः यक्ष एवं यक्षिणियों की मूर्तियों का निर्माण हुआ।

पाटलिपुत्र के 'कुम्रहार' से एक लकड़ी निर्मित राजप्रासाद का अवशेष प्राप्त हुआ है। मेगस्थनीज ने पोलिब्रोथा (पाटलिपुत्र) नगर का वर्णन किया है। फाह्यान के अनुसार, पाटलिपुत्र का राजप्रासाद देवताओं द्वारा निर्मित है।

मौर्यकालीन कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन अशोक के स्तम्भों में दिखाई पड़ता है। ये चमकदार एकाश्म स्तम्भ, लाला बलुआ पत्थर से निर्मित होते थे। इन स्तम्भों के दो मुख्य भाग उल्लेखनीय हैं—स्तम्भ यष्टि या गावदुम लाट और शीर्ष भाग। शीर्ष भाग के मुख्य अंश हैं घण्टा, जिसे अवांगमुखी कमल भी कहते हैं। इसके ऊपर गोल अण्ड या चौकी है। अशोक के स्तम्भों में सिंह, घोड़ा, हाथी और बैल प्राप्त होते हैं।

अशोक के एकाश्म स्तम्भों में सर्वोत्कृष्ट सारनाथ स्तम्भ लेख हैं। सारनाथ के शीर्षस्तम्भ पर चार सिंह पीठ सटाए बैठे हैं। ये चार सिंह एक चक्र धारण किए हुए हैं, जिसमें 24 तीलियाँ हैं। यह चक्र बुद्ध के धर्मचक्र प्रवर्तन का प्रतीक है। रामपुरवा में नटुआ बैल ललित मुद्रा में खड़ा है। संकिशा स्तम्भ के शीर्ष स्तम्भ पर हाथी की आकृति है। अशोक के स्तम्भ पर ईरानी एवं यूनानी प्रभाव दिखाई देता है।

स्तूप मौर्यकालीन स्थापत्य की महत्वपूर्ण देन है। साँची का महास्तूप, सारनाथ का धर्मराजिका स्तूप, भरहुत तथा तक्षशिला स्थित स्तूपों का निर्माण मूलतः अशोक के काल में हुआ था। ये स्तूप ईंटों के बने थे। अब तक का सबसे प्राचीन स्तूप नेपाल की सीमा पर पिपरहवा से प्राप्त हुआ है।

अशोक ने वर्तमान बिहार के गया जिले में स्थित बाराबर हिल्स (पहाड़ियों) में स्थित सुदामा गुफा, कर्ण चौपड़ गुफा आजीवक संप्रदाय को दान में थी। अशोक ने एक अन्य गुफा विश्व झोपड़ी का निर्माण करवाया।

अशोक के पौत्र दशरथ ने नागार्जुनी पहाड़ी में गोपिका व लोमष ऋषि की गुफा का निर्माण करवाया।

ओडिशा में उदयगिरि की पहाड़ियों को काटकर एक शैल कृत हाथी की मूर्ति उत्कीर्ण की गई है। यह धौली हस्ति नाम से विख्यात है। इसमें एक हाथी को चट्टान को फाड़कर बाहर आते हुए दर्शाया गया है।

मौर्य साम्राज्य का पतन

अशोक के उत्तराधिकारी के रूप में कुणाल, सम्प्रति, दशरथ, शालिशुक एवं वृहद्रथ का नाम प्राप्त होता है। वृहद्रथ मौर्य वंश का अन्तिम शासक था, जिसकी हत्या उसके ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने 185 ई.पू. में कर दी थी।

मौर्य साम्राज्य जैसे विस्तृत साम्राज्य के पतन के लिए किसी एक कारण का होना पर्याप्त नहीं है। स्पष्ट साक्ष्यों के अभाव में विद्वानों ने अलग-अलग कारण प्रस्तुत किए हैं। इतिहासकार हरिप्रसाद शास्त्री ने धार्मिक नीति (ब्राम्हण विरोधी नीति), हेमचन्द्र राय चौधरी ने अहिंसक एवं शान्तिप्रिय नीति तथा रोमिला थापर ने अत्यधिक केन्द्रीकृत शासन व्यवस्था को मौर्य साम्राज्य के पतन का कारण बताया है।

मौर्योत्तर काल (Post-Maurya Period)

मौर्य साम्राज्य के पतन के उपरांत कुछ समय के लिए भारत की राजनीतिक एकता भंग हो गई। पूर्वी भारत, मध्य भारत, दक्कन में मौर्यों का स्थान कई स्थानीय राजवंशों; जैसे—शुंग, कण्व और सातवाहनों ने ले लिया, जबकि उत्तर-पश्चिमी भारत पर अनेक विदेशी आक्रमणकारियों यथा इण्डोग्रीक, शक, पार्थियन्स (पार्थियाई) कुषाण ने अपने राज्यों की स्थापना की।

शुंग वंश (187 ई.पू.-78 ई.पू.)

शुंग संभवतः उज्जैन प्रदेश के थे तथा इनके पूर्वज मौर्यों के अधीन थे। पुष्यमित्र शुंग ने 185 ई.पू. में मौर्य शासक वृहद्रथ मौर्य की हत्या करके शुंग वंश की स्थापना की। पुष्यमित्र शुंग सेनानी के नाम से शासन करता था। बाणभट्ट के हर्षचरित में पुष्यमित्र को अनार्य कहा गया है।

पुष्यमित्र शुंग कट्टर ब्राह्मणवादी था। धनदेव के अयोध्या अभिलेख के अनुसार उसने दो अश्वमेघ यज्ञों का अनुष्ठान किया। सुप्रसिद्ध संस्कृत व्याकरण के ज्ञाता पतंजलि उसके अश्वमेघ यज्ञ के पुरोहित थे। संभवतः पुष्यमित्र बौद्ध विरोधी था, लेकिन भरहुत स्तूप बनाने का श्रेय पुष्यमित्र शुंग को ही दिया जाता है। साँची स्तूप में काष्ठ वेदिका के स्थान पर उसने पाषाण वेदिका बनवाई।

शुंग शासक भागभद्र (भागवत) के शासनकाल के 14वें वर्ष में तक्षशिला के यवन शासक एण्टियालकिट्स के राजदूत हेलियोडोरस ने विदिशा में वासुदेव के सम्मान में गरूड़ स्तम्भ स्थापित किया। इस पर दम्भ (आत्मनिग्रह), त्याग तथा अप्रसाद तीन शब्द अंकित हैं। हेलियोडोरस का गरूड़ स्तम्भ हिन्दू धर्म से संबंधित प्रथम स्मारक है। इस काल में भागवत धर्म का उदय हुआ तथा वासुदेव की उपासना प्रारंभ हुई।

अग्निमित्र, वसुमित्र, वज्रमित्र, भागभद्र एवं देवभूति क्रमशः पुष्यमित्र शुंग के उत्तराधिकारी हुए थे। अग्निमित्र 'मालविकाग्निमित्र' का नायक है, जिसमें अग्निमित्र की अमात्य परिषद की चर्चा है। देवभूति इस वंश का अन्तिम शासक था।

कण्व वंश (75 ई.पू.-30 ई.पू.)

शुंग वंश के अन्तिम शासक देवभूति की हत्या कर उसके मंत्री वसुदेव ने 75 ई.पू. में कण्व वंश की स्थापना की। यह भी ब्राह्मण वंश था। इसमें केवल चार शासक हुए—वसुदेव, भूमिमित्र, नारायण तथा सुशर्मन। अन्तिम शासक सुशर्मन की हत्या 30 ई.पू. में सिमुक ने कर दी और एक नवीन ब्राह्मण वंश आन्ध्र सातवाहन की नींव डाली।

सातवाहन वंश (60 ई.पू.—37 ई.पू.)

सातवाहन वंश की स्थापना सिमुक ने की थी, सातवाहन वंश को पुराणों में आन्ध्र भृत्य भी कहा गया है। यह वंश किसी-न-किसी रूप में लगभग चार शताब्दियों तक बना रहा, जो प्राचीन भारत में किसी एक वंश का सर्वाधिक कार्यकाल है। प्रतिष्ठान इस वंश की राजधानी थी।

शातकर्णी प्रथम

शातकर्णी प्रथम इस काल का पहला महत्वपूर्ण शासक था, जिसकी उपलब्धियों की जानकारी नागानिका (इसकी रानी) के *नानाघाट* अभिलेख से मिलती है। भूमिदान का पहला साक्ष्य इसी अभिलेख से प्राप्त होता है। इसने दो-अश्वमेध तथा एक राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया था। पुराणों मे इसे कृष्ण का पुत्र कहा गया है।

हाल

सातवाहन वंश का हाल महानतम शासक था। वह एक बड़ा कवि तथा कवियों एवं विद्वानों के आश्रयदाता के रूप में प्रसिद्ध था। हाल ने *गाथासप्तशती* नामक एक मुक्तक काव्य की रचना की थी। यह प्राकृत भाषा में है। उसकी राजसभा में *वृहत्कथा* के रचयिता गुणाढ्य तथा *कातंत्र* नामक संस्कृत व्याकरण के लेखक सर्ववर्मन निवास करते थे।

गौतमीपुत्र शातकर्णी (106—130 ई.)

यह सातवाहन वंश का महानतम शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी था, जिसकी सैन्य विजयों की जानकारी इसकी माता बलश्री के नासिक अभिलेख से प्राप्त होती है। इस अभिलेख में उसे एकमात्र ब्राह्मण एवं अद्वितीय ब्राह्मण कहा गया है। इस अभिलेख के अनुसार उसके घोड़ों ने तीनों समुद्रों का पानी पिया था। नासिक (जोगलथम्बी) से चाँदी के 8 हजार सिक्के प्राप्त हुए हैं, जिनमें एक तरफ नहपान तथा दूसरी तरफ गौतमीपुत्र शातकर्णी का नाम है।

उसने राजाराज, वेंकटस्वामी, विंध्यनरेश की उपाधियाँ ग्रहण कीं। उसने बौद्ध संघ को अजकालिकय तथा कार्ले के भिक्षुसंघ को करजक नामक ग्राम दान में दिए।

वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी (130—159 ई.)

गौतमीपुत्र शातकर्णी का उत्तराधिकारी वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी था, जिसे शक शासक रूद्रदामन ने दो बार पराजित किया। पुलुमावी को दक्षिणापथेश्वर भी कहा गया है। उसके अभिलेख नासिक, कार्ले और अमरावती में मिले हैं।

यज्ञश्री शातकर्णी

यज्ञश्री शातकर्णी (174-203 ई.) सातवाहन वंश का अन्तिम महान शासक था, जिसके सिक्के पर नाव का चित्र अंकित है। सातवाहन साम्राज्य के अवशेष पर वाकाटक एवं इक्ष्वाकु वंश की स्थापना हुई।

सातवाहन कालीन संस्कृति

इस समय में महिलाओं की दशा अच्छी थी। महिलाएँ शिक्षित थीं, पर्दा प्रथा नहीं था। स्त्रियाँ भी सम्पत्ति में भागीदार होती थीं। सातवाहन समाज में मातृसत्तात्मक ढाँचे का आभास मिलता है। समाज में अन्तर्जातीय विवाह होते थे। राजपरिवार की महिलाएँ बौद्ध धर्म को प्रश्रय देती थीं जबकि पुरुष वैदिक धर्म को।

सातवाहनों ने ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं को कर-मुक्त ग्रामदान देने की प्रथा प्रारंभ की, जो आबाद भूमि और ग्राम दान में दिए जाते थे। सातवाहनों की राजकीय भाषा प्राकृत थी; सातवाहनों ने सर्वप्रथम सीसे की मुद्रा चलाई थी।

इक्ष्वाकु वंश

ये सातवाहनों के सामन्त थे। इस वंश के संस्थापक श्रीशान्तमूल थे, जिन्होंने अश्वमेघ यज्ञ किया था। इसके उत्तराधिकारी वीरपुरुषदत्त ने नागार्जुनकोण्डा के प्रसिद्ध स्तूप का निर्माण करवाया। इस वंश के शासक बौद्ध मत के मानने वाले थे।

चेदि वंश

कलिंग के चेदि वंश से संबंधित जानकारी का मुख्य स्रोत खारवेल का हाथीगुम्भा अभिलेख (प्रथम शताब्दी ई.पू.) है। इस अभिलेख से अस्पष्ट रूप से पता चलता है कि इस वंश की स्थापना महामेघवाहन नामक व्यक्ति ने की थी। खारवेल इस वंश का महानतम शासक था, वह जैन तीर्थंकर शीतलनाथ की मूर्ति मगध से लाने में सफल हुआ, जिसको तीन शताब्दी पूर्व मगध के शासक महापद्मनन्द द्वारा कलिंग से ले जाया गया था।

जैन लोगों को ग्राम दान में दिए जाने का प्रथम उल्लेख *हाथीगुम्फा* अभिलेख से प्राप्त होता है। इस अभिलेख में दक्षिण के तीन राज्यों—चोल, चेर एवं पाण्ड्यों को उसके द्वारा पराजित किए जाने का उल्लेख है।

हिन्द-यवन (इण्डो-ग्रीक)

उत्तर-पश्चिम से पश्चिमी विदेशियों के आक्रमण मौर्योत्तर काल की सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक घटना थी। इनमें सबसे पहले आक्रमणकारी थे, बैक्ट्रिया के ग्रीक (यूनानी) जिन्हें प्राचीन भारतीय साहित्य ने यवन कहा है। सर्वप्रथम यूनानी आक्रमणकारियों ने हिन्दूकुश पर्वत पार किया। इन्हें इण्डो-ग्रीक, हिन्द-यवन एवं बैक्ट्रियन ग्रीक के नाम से भी जाना जाता है।

डेमेट्रियस प्रथम

भारतीय सीमा में सर्वप्रथम प्रवेश करने का श्रेय डेमेट्रियस प्रथम को है। इसने 183 ई.पू. के लगभग पंजाब के कुछ भागों को जीतकर साकल को

अपनी राजधानी बनाया। डेमेट्रियस ने भारतीयों के राजा की उपाधि धारण की और यूनानी तथा खरोष्ठी दोनों लिपियों वाले सिक्के चलाए। डेमेट्रियस के उपरांत यूक्रेटाइड्स ने भारत के कुछ हिस्सों को जीतकर तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाया।

मिनाण्डर (160–120 ई.पू.)

यह सबसे प्रसिद्ध यवन शासक था। यह संभवत: डेमेट्रियस कुल का था। मिनाण्डर बौद्ध साहित्य में मिलिन्द के नाम से प्रसिद्ध है। प्रसिद्ध बौद्ध ग्रन्थ मिलिन्दपन्हों में बौद्ध भिक्षु नागसेन एवं मिनाण्डर की वृहद् वार्ता संकलित है।

भारत पर बैक्ट्रिया के यूनानी राजाओं के शासन के आरंभ के साथ ही सिक्कों पर राजाओं के नाम व तिथियाँ उत्कीर्ण की जाने लगीं।

हिन्द-यवन शासकों का इतिहास जानने का एकमात्र स्रोत सिक्के हैं। इनके चाँदी के सिक्के द्रम कहे जाते थे। सर्वप्रथम इण्डो-ग्रीक शासकों ने ही लेख वाले सिक्के (मुद्रालेख) तथा सोने के सिक्के जारी किए।

एक अन्य बैक्ट्रियन यूक्रेटाइड्स ने भी भारत के कुछ भागों को जीतकर तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाया। इस वंश के सबसे प्रतापी शासक एण्टियालकीड्स ने हेलियोडोरस को भागभद्र के दरबार में भेजा था।

शक

शक मूलतः सीरिया के उत्तर में निवास करने वाली जाति थी। शक बोलन दर्रे के रास्ते भारत आए। भारतीय स्रोतों में शकों को सीथियन नाम दिया गया है। शक पाँच शाखाओं में विभक्त थे, जिनमें प्रथम अफगानिस्तान में, दूसरी पंजाब में (राजधानी-तक्षशिला), तीसरा मथुरा में, चौथी पश्चिमी भारत में तथा 5वीं शाखा ने ऊपरी दक्कन में अपना प्रभुत्व स्थापित किया।

तक्षशिला के शक शासकों में मोगा/माउस प्रमुख था। इसे प्रथम शक शासक माना जाता है। इसके अनेक सिक्के प्राप्त हुए हैं।

महाराष्ट्र के पश्चिमी शक शासकों में क्षहरात वंश का नहपान सबसे प्रसिद्ध था। सातवाहन शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी से पराजित हुआ था। नहपान ने अपने सिक्कों में अपने को राजा लिखा है। इसके सिक्के अजमेर से नासिक तक मिलते हैं।

रूद्रदामन प्रथम (130–150 ई.)

भारत में शकों का सर्वाधिक प्रसिद्ध राजा रूद्रदामन हुआ। रूद्रदामन ने अपने समकालीन शातकर्णी द्वितीय (वशिष्ठीपुत्र पुलुमावि) को दो बार हराया। रूद्रदामन ने सुदर्शन झील की मरम्मत कराई। इस झील का निर्माण मौर्य काल में हुआ था। इसके समय सौराष्ट्र प्रान्त का शासक सुविख्यात था।

रूद्रदामन संस्कृत भाषा का संरक्षक था। उसने ही सबसे पहले विशुद्ध संस्कृत भाषा में लम्बा अभिलेख (जूनागढ़ अभिलेख) जारी किया। इस वंश का अन्तिम शासक रूद्रसिंह तृतीय था। मालवा के एक शासक विक्रमादित्य ने 57 ई.पू. में शकों को पराजित किया था। इसी विक्रमादित्य के नाम पर एक नवीन सम्वत् विक्रम सम्वत् की नींव पड़ी।

पार्थियाई / पहलव

पार्थियाई मध्य एशिया के ईरान से आए थे। पश्चिमोत्तर भारत में शकों के आधिपत्य के बाद पार्थियाई लोगों का आधिपत्य हुआ, जिन्हें भारतीय स्रोतों में पहलव कहा गया है। भारत में पार्थियन साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक मिथ्रेडेट्स प्रथम (171-130 ई.पू.) था।

पहलव वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक गोन्दोफर्निस (20-41 ई.) था। खरोष्ठी लिपि में उत्कीर्ण तख्तेबही अभिलेख में इसे गुदुव्हर कहा गया है। फारसी में उसका नाम बिन्दफर्ण है, जिसका अर्थ है—'यश विजयी'। गोन्दोफर्निस के शासनकाल में सेण्ट टॉमस इसाई धर्म का प्रचार करने के लिए भारत आया था। इसकी राजधानी तक्षशिला थी। पार्थियन राजाओं के सिक्कों पर धार्मिय (धार्मिक) उपाधि मिलती है। उन्होंने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था। गोन्दोफर्निस ने देवव्रत की उपाधि ली थी। इस साम्राज्य का अन्त कुषाणों द्वारा किया गया।

कुषाण

पार्थियाई लोगों के बाद कुषाण भारत में आए, जिन्हें यूचि तथा तोचेरियन (तोखारी) भी कहा जाता है। इनका मूल निवास स्थान चीन की सीमा पर स्थित चीनी तुर्किस्तान था। कालान्तर में यूचि कबीला पाँच भागों में बँट गया था। इन्हीं में से एक कबीले ने भारत के कुछ भागों पर शासन किया।

कुजुल कडफिसस (15–64 ई.)

भारत में सर्वप्रथम कुजुल कडफिसस ने कुषाण वंश की स्थापना की। इसने रोमन सिक्कों की नकल करके ताँबे के सिक्के ढलवाए तथा महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।

कडफिसस प्रथम के प्रारंभिक सिक्कों के मुख्य भागों पर यूनानी राजा हर्मियस की आकृति है और पृष्ठ भाग पर उसकी अपनी, इसका अर्थ यह हुआ कि वह पहले यूनानी राजा हर्मियस के अधीन था।

विम कडफिसस

यह भारत में कुषाण शक्ति का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। इसने बड़ी संख्या में सोने के सिक्के चलवाए। इसके सिक्कों पर एक ओर यूनानी लिपि तथा दूसरी ओर खरोष्ठी लिपि उत्कीर्ण है। यह शैव मत का अनुयायी था। इसके कुछ सिक्कों पर शिव, नन्दी तथा त्रिशूल की आकृतियाँ मिलती हैं। इसने महेश्वर की उपाधि धारण की।

कनिष्क

कनिष्क सर्वाधिक विख्यात कुषाण शासक था, जिसने 78 ई. में एक सम्वत् चलाया, जो शक सम्वत् कहलाता है। इसे वर्तमान में भारत सरकार द्वारा भी प्रयोग में लाया जाता है। वर्तमान में शक सम्वत् चैत्र (21 या 22 मार्च) से प्रारंभ होता है। कनिष्क की प्रथम राजधानी पेशावर (पुरूषपुर) एवं दूसरी राजधानी मथुरा थी। कनिष्क ने कश्मीर को जीतकर वहाँ 'कनिष्कपुर' नामक नगर बसाया। उसने काशगर, यारकन्द तथा खोतान पर भी विजय प्राप्त की।

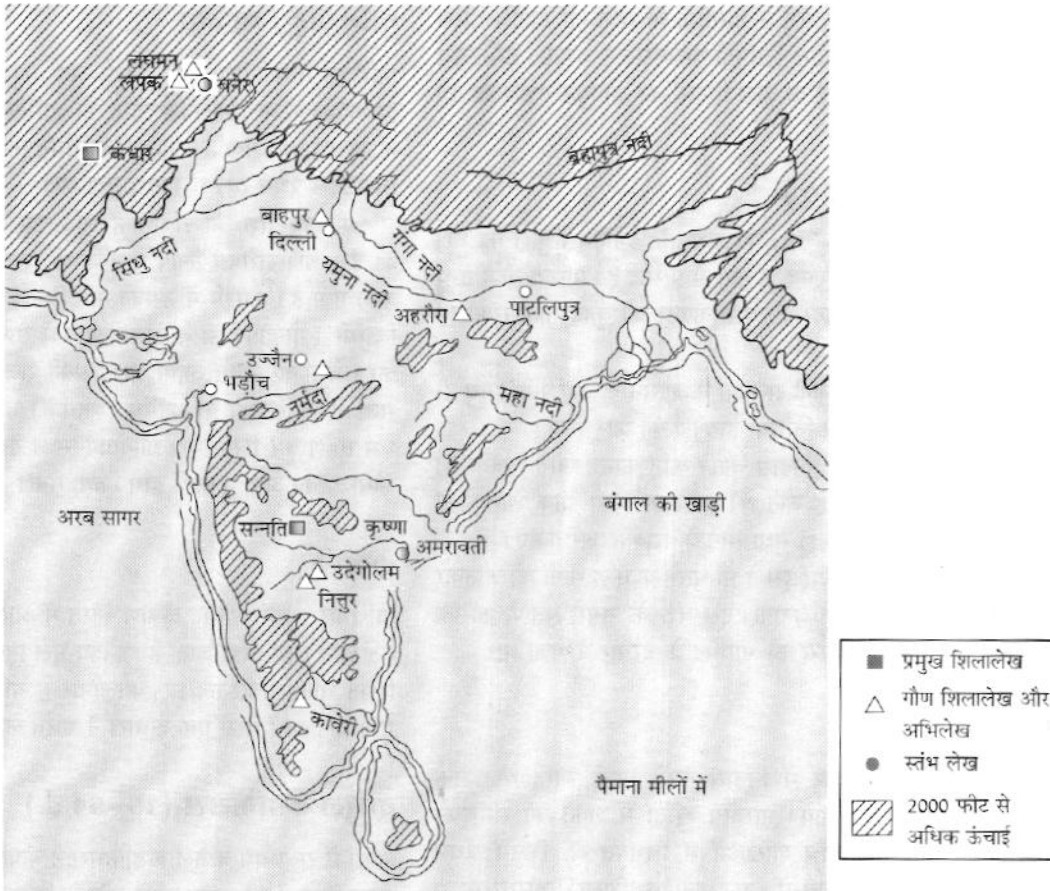

चित्र 6.2: 1961 के बाद अशोक के शिलालेखों के स्थान

कनिष्क ने पाटलिपुत्र पर आक्रमण कर वहाँ से प्रसिद्ध विद्वान अश्वघोष, बुद्ध का भिक्षापात्र और एक अनोखा कुक्कुट प्राप्त किया था। महास्थान (बोगरा) में पाई गई सोने की मुद्रा पर कनिष्क की एक खड़ी मूर्ति अंकित है। मथुरा में कनिष्क की एक प्रतिमा मिली है, जिसमें उन्हें घुटने तक चोगा एवं पैरों में भारी जूते पहने हुए दिखाया गया है।

कनिष्क कला एवं संस्कृति साहित्य का महान संरक्षक था। इसके समय में मूर्तिकला की गान्धार एवं मथुरा शैली का जन्म हुआ। उसके दरबार में पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष, नागार्जुन तथा चरक जैसे विद्वान निवास करते थे।

हुविष्क

कनिष्क का उत्तराधिकारी हुविष्क हुआ, जिसने कश्मीर में हुष्कपुर नामक नगर की स्थापना करवाई। उसके सिक्कों पर शिव, स्कन्द तथा विष्णु की आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं। कुषाण शासकों ने महाराजाधिराज (भारतीय उपाधि), देवपुत्र (चीनी उपाधि), कैसर (रोमन उपाधि) जैसी उपाधियाँ धारण कीं। मन्दिर बनवाने की प्रथा (देवकुल) भी प्रारंभ की। कुषाणों ने सर्वाधिक शुद्ध स्वर्ण सिक्के (124 ग्रेन) जारी किए। इन्हें सर्वप्रथम ताम्र सिक्के चलाने का श्रेय भी प्रदान किया जाता है।

प्रशासनिक स्थिति

कुषाण शासकों ने चीनी शासकों के अनुरूप देवपुत्र की उपाधि धारण की। कुषाणों ने राज्य शासन में क्षत्रप प्रणाली चलाई। शकों एवं पार्थियन ने दो आनुवंशिक राजाओं के संयुक्त शासन की परिपाटी चलाई। शक शासक त्रतार (मुक्तिदाता) की उपाधि लेते थे। कुषाणों ने प्रान्तों में द्वैध शासन की प्रणाली प्रारंभ की। यूनानियों ने सेनानी-शासन (मिलिटरी गवर्नरशिप) की परिपाटी चलाई।

सातवाहन शासकों ने ब्राह्मणों एवं बौद्ध भिक्षुओं को पहली शताब्दी ई.पू. में कर मुक्त भूमि प्रदान करने की प्रथा प्रारंभ की। सातवाहनों के समय का नानाघाट अभिलेख भूमिदान का प्रथम अभिलेखीय प्रमाण है।

आर्थिक स्थिति

वाणिज्य एवं व्यापार

आर्थिक रूप से इस काल में—वाणिज्य व्यापार की प्रगति हुई। इस काल में वाणिज्य एवं व्यापार की उन्नति का प्रमुख कारण नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में नए वर्गों का उदय, रोम, चीनी एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापारिक सम्बन्ध एवं मानसून की खोज थी।

कुषाणों ने चीन से ईरान तथा पश्चिम एशिया तक जाने वाले रेशम मार्ग पर नियंत्रण रखा था। यह मार्ग उनके साम्राज्य से गुजरता था। सिल्क मार्ग आय का बहुत बड़ा स्रोत था।

ईसा की पहली सदी में हिप्पालस नामक ग्रीक नाविक ने अरब सागर से चलने वाली मानसून हवाओं की जानकारी दी। इससे पश्चिमी एशिया के बन्दरगाहों से व्यापार और अधिक सुगम हो गया। ईसा की पहली शती से व्यापार मुख्यतः समुद्री मार्ग से ही होने लगा, इससे पूर्व अधिकतर व्यापार स्थल मार्ग से होता था।

भारत–रोम व्यापार

प्रथम शताब्दी ई. में अज्ञात यूनानी नाविक ने अपनी *पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी* नामक पुस्तक में भारत द्वारा रोमन साम्राज्य को निर्यात की जाने वाली वस्तुओं का विवरण दिया गया है। प्लिनी ने प्रतिवर्ष रोम से भारत में जाने वाले सोने की भारी मात्र के लिए दुःख प्रकट किया है। अरिकामेडु को *'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी'* में पेडोक नाम से संबोधित किया गया है।

इस काल में भारत और रोम के बीच व्यापार विकसित अवस्था में था। व्यापार सन्तुलन भारत के पक्ष में था और रोम से मुख्यतः स्वर्ण मुद्राएँ प्राप्त होती थीं। रोमवासी मुख्यतः मसाले का आयात करते थे। काली मिर्च को यवनप्रिय कहा जाता था।

रोम को निर्यातित प्रमुख वस्तुएँ मसाले, काली मिर्च, मोती, मलमल, हाथी दाँत की वस्तुएँ, इत्र, चन्दन, कछुवा की खोपड़ी, केसर, जटामासी, हीरा, रत्न, तोता, शेर, चीता आदि।

रोम से आयातित प्रमुख वस्तुएँ—कलश, शराब, सोना एवं चाँदी के सिक्के पुखराज, टिन, ताँबा, शीशा, लाल चमकीले अर्टेटाइन मृद्भाण्ड थीं। भारत चीन से कच्चे रेशम, रेशम के धागे और रेशमी वस्त्र मंगाता था। भड़ौच (मृगुकच्छ) बन्दरगहा से इन वस्तुओं का निर्यात पश्चिमी देशों को किया जाता था। अरब और मिस्र से घोड़े लाए जाते थे।

सोपारा (पश्चिमी तट); भड़ौच (गुजरात), देवल (सिन्ध), पोलूरा (उड़ीसा तट), चौल, नौरा, टिंडिस, मुजरिम (केरल तट),

कोरकई, पुहार/कावेरीपत्तनम्, नागपत्तनम् (तमिल तट), मसूलीपत्तनम्, कौण्डेक, साइला एवं निट्रिंग (आन्ध्र तट) थे।

शिल्प एवं उद्योग

दीर्घनिकाय में 24 प्रकार एवं महावस्तु में 36 प्रकार के व्यावसायियों तथा मिलिन्दपन्हों में 75 प्रकार के व्यवसायों की चर्चा है। व्यापार एवं विनिमय में मुद्राओं का प्रयोग मौर्योत्तर युग की सबसे बड़ी देन है।

इस काल का प्रमुख उद्योग, वस्त्र उद्योग था। भारत ने सीसा ढालने की जानकारी ईस्वी सन् के आरम्भ में आकर प्राप्त की।

मौर्योत्तरकाल में शाटक नामक वस्त्र के लिए मथुरा; ईंटों के बने रंगाई के हौज के लिए उरैयूर एवं अरिकमेडु; वृक्ष के रेशों से बने वस्त्र के लिए मगध; मलमल के लिए बंग एवं पुण्ड्र क्षेत्र तथा मसाले के लिए दक्षिण भारत प्रसिद्ध था।

व्यापारिक प्रगति के कारण शिल्पकारों ने शिल्प श्रेणियों को संगठित किया। श्रेणियों के पास अपना सैन्य बल होता था। श्रेणी का प्रधान प्रमुख, निगम का प्रधान श्रेष्ठि तथा पूग का प्रधान ज्येष्ठक कहलाता था। श्रेणियाँ महाजन का भी कार्य करती थीं।

व्यापारिक कारवाँ के प्रधान को सार्थवाह कहा जाता था। क्रेता और विक्रेता के मध्य सौदेबाजी पणितव्य कहलाती थी। प्रस्थ, आढ़क, द्रोण और खारी बढ़ते हुए क्रम में इस काल के बाट थे।

सिक्के

हिन्द-यवन शासकों ने भारत में सर्वप्रथम सोने के सिक्के चलाए। उनके सिक्कों पर द्विभाषिक लेख होते थे एक तरफ यूनानी भाषा एवं लिपि में तथा दूसरी तरफ प्राकृत भाषा और खरोष्ठी लिपि में। उन्होंने सोने, ताँबे एवं चाँदी के सिक्के चलाए। सोने का सिक्का वजन में 133 ग्रेन का होता था। कुषाणों ने सर्वप्रथम शुद्ध स्वर्ण के सिक्के चलाए जो 124 ग्रेन के थे। सातवाहनों ने सीसे के अतिरिक्त चाँदी, ताँबा, पोटीन आदि के सिक्के भी चलाए।

इस काल में विभिन्न प्रकार के सिक्के प्रचलित थे। सोने के सिक्के निष्क, दीनार, सुवर्ण और पल, चाँदी के सिक्के शतमान, ताँबे के सिक्के काकणी तथा सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, सीसा आदि सभी धातुओं से निर्मित सिक्के कर्षापण कहलाते थे।

सामाजिक स्थिति

मौर्योत्तर काल में परंपरागत चारों वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र मौजूद थे, किन्तु शिल्प और वाणिज्य में उन्नति का फायदा शूद्रों को मिला। इस काल में बड़ी संख्या में जनजातीय तत्वों तथा विदेशी तत्वों का आत्मसातीकरण किया गया। यूनानी, शक, पार्थियन और कुषाण सभी भारत में अपनी-अपनी पहचान अन्ततः खो बैठे। वे भारतीय समाज में योद्धाओं के वर्ग में अर्थात् क्षत्रिय वर्ग में समाविष्ट हुए। इस काल के विदेशी शासकों को म्लेच्छ एवं निम्न क्षत्रिय वर्ग के रूप में मान्यता मिली।

धार्मिक स्थिति

भक्ति का विकास इस काल के धर्म की प्रमुख विशेषता है। कालांतर में भक्ति के साथ अवतारवाद की परिकल्पना भी जुड़ गई एवं अवतारवाद के साथ मूर्तिपूजा की संकल्पना भी जुड़ गई। इस काल में कई विदेशी शासक विष्णु के उपासक बन गए। आर्य देवताओं के समानान्तर गैर-आर्य देवता भी स्थापित हो गए, जैसे—गणेश, कार्तिकेय, मातृदेवी, वृक्ष पूजा, सर्प पूजा आदि। मोरा से प्राप्त प्रथम सदी ई. के एक लेख में संकर्षण, वासुदेव, प्रद्युम्न, साम्ब व अनिरूद्ध की पूजा का वर्णन मिलता है।

इस काल में बौद्ध धर्म और उसकी महायान शाखा का सर्वाधिक प्रचार-प्रसार हुआ। बौद्ध धर्म में मूर्ति पूजा आरम्भ हुई एवं इसका प्रचलन ब्राह्मण समुदाय में भी हुआ। बुद्ध की सबसे प्राचीन मूर्ति मथुरा से मिली है। भारत में सबसे पहले बुद्ध की प्रतिमाओं की पूजा की गई। बौद्ध धर्म की महायान शाखा के अनुयायियों ने सर्वप्रथम बुद्ध की प्रतिमा को स्थापित करके उनकी पूजा आरंभ की।

कला एवं संस्कृति

कुषाण काल में कला के क्षेत्र में दो स्वतंत्र शैलियों का विकास हुआ—गान्धार कला एवं मथुरा कला। गान्धार शैली को ग्रीक-बौद्ध शैली भी कहा

जाता है। गान्धार शैली में बुद्ध की प्रतिमाएँ यूनान और रोम की मिश्रित शैली में बनाई गई। मथुरा शैली मूलतः देशी कला थी, जिसमें बुद्ध की विलक्षण प्रतिमाएँ बनीं, परंतु इस जगह की ख्याति कनिष्क की सिरविहिन खड़ी मूर्ति को लेकर है। यहाँ महावीर की भी कई प्रस्तर मूर्तियाँ बनाई गईं।

आन्ध्र प्रदेश में नागार्जुनकोण्डा और अमरावती बौद्ध कला के महान केन्द्र थे, जहाँ बुद्ध के जीवन की कथाएँ अनगिनत पट्टों पर चित्रित की गई हैं तथा इसमें प्रमुख रूप से सफेद पत्थर का प्रयोग किया गया है।

तालिका 6.8: गान्धार कला एवं मथुरा कला में अंतर

गान्धार कला	मथुरा कला
गहरे नीले एवं काले पत्थर का प्रयोग होता था।	लाल पत्थर का प्रयोग होता था।
संरक्षक—शक एवं कुषाण थे।	संरक्षक—कुषाण थे।
यथार्थवादी था।	आदर्शवादी था।
मुख्यतः बुद्ध की मूर्तियाँ थीं।	बौद्ध, जैन तथा ब्राह्मण धर्म से संबंधित मूर्तियाँ थीं।

साँची के महास्तूप का निर्माण मौर्य काल में हुआ था। शुंग काल में उसे पाषाण पट्टिकाओं से जोड़ा गया तथा वेदिका भी पत्थर की ही बनाई गई, जिससे इसका आकार पहले से दोगुना हो गया। सातवाहन काल में वेदिका के चारों दिशाओं में चारण तोरण लगा दिए गए।

इस काल में विदेशी शासकों ने संस्कृत साहित्य का संरक्षण एवं सम्पोषण किया। अश्वघोष ने बुद्ध चरित्म (बुद्ध की जीवनी) सौन्दरानंद एवं 'सारिपुत्र प्रकरण' नामक ग्रंथ लिखे तथा सौन्दरानन्द नामक काव्य भी लिखा, महायान बौद्ध सम्प्रदाय की प्रगति के फलस्वरूप अनेक अवदानों की रचना हुई। धार्मिकेत्तर साहित्य का सबसे अच्छा उदाहरण वात्स्यायन का कामसूत्र है।

मौर्योत्तर काल में यूनानियों के सम्पर्क में आने के बाद खगोल और ज्योतिषशास्त्र के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई। संस्कृत ग्रन्थों में ग्रह नक्षत्रों के संचार सम्बन्धी बहुत सारे यूनानी शब्द मिलते हैं। भारतीय ज्योतिष यूनानी चिन्तनों से प्रभावित हुआ। चिकित्साशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र एवं रसायनशास्त्र का विभेद विवेचन चरक एवं सुश्रुत ने किया है।

अध्याय सार संग्रह

- यूनानी लेखकों ने चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए सैन्ड्रोकोटस तथा एन्ड्रोकोटस नामों का प्रयोग किया है।
- चन्द्रगुप्त के प्रारंभिक जीवन की जानकारी के लिए मुख्यतः बौद्ध स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ता है।
- मुद्राराक्षस नाम ग्रंथ मे चन्द्रगुप्त को 'वृषल' तथा 'कुलहीन' कहा गया है।
- प्लूटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त ने 6 लाख सेना लेकर समूचे भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित किया।
- मॉस्की शिलालेख में 'अशोक' नाम का उल्लेख किया गया है।
- अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था। उसने 'देवानांप्रियदर्शी' की उपाधि धारण की।
- कल्हण ने 'राजतरंगिणी' में उल्लेख किया है कि अशोक शैव धर्म का अनुयायी था।
- मौर्यकाल में कर मुक्त भूमि को ब्रम्हदेय कहा जाता था।
- अपने अभिषेक के बीसवें वर्ष अशोक ने लुम्बिनी (बुद्ध के जन्म स्थान) में लगान की दर को एक-चौथाई से घटाकर आठवां हिस्सा कर दिया।
- बिन्दुसार का शासन काल विदेशों के साथ कुटनीतिक संबधों के लिए महत्वपूर्ण था।
- तमिल ग्रंथ अहनानुरू और पुरनानुरू से पता चलता है कि चन्द्रगुप्त ने दक्षिण भारत पर भी आक्रमण किया था।
- अशोक ने धम्म की जो परिभाषा दी है, वह राहुलोवादसुत्त से ली गई है।
- डॉ. स्मिथ के अनुसार अशोक की यात्रा का क्रम लुम्बिनी, कपिलवस्तु, सारनाथ, श्रावस्ती, बोध गया एवं कुभीकार था।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में गुप्तचरों को 'गूढ़ पुरूष' कहा गया है।
- मेगस्थनीज ने 'इंडिका' नामक ग्रंथ की रचना की।
- बिन्दुसार की मृत्यु के समय अशोक उज्जैन का वायसराय था।
- अशोक ने कश्मीर में 'श्रीनगर' नामक नगर की स्थापना की।
- पुष्यमित्र शुंग ने मौर्य को सत्ताच्युत कर 185 ई.पू. में शुंग वंश की स्थापना की।
- शुंग वंश के अंतिम शासक देवभूति की हत्या कर उसके सचिव वसुदेव ने ई.पू. 75 में कण्व वंश की स्थापना की।
- सातवाहनों को आन्ध्र भी कहा जाता है। इसका पहला शासक सिमुक था।
- शक शासक अपने को क्षत्रप कहते थे।
- कनिष्क ने शक संवत की शुरूआत 78 ई. में की।
- गार्गी संहिता में यवन आक्रमण का उल्लेख मिलता है।
- बेस नगर के अभिलेख में यवन राजदूत हेलियोडोरस का वर्णन भागवत धर्म के अनुयायी के रूप में किया गया था।
- शक शासक रूद्रदमन ने सुराष्ट्र स्थित सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार किया था।
- कुषाण काल में सोने की मुद्राएं सर्वाधिक प्रचलन में थी।